# बिनी के जानवर

मिलसेंट सेल्सैम

इस किताब का प्रकाशन भारत ज्ञान विज्ञान समिति ने देश भर में चल रहे साक्षरता अभियानों में उपयोग के लिए किया गया है। जनवाचन आंदोलन के तहत प्रकाशित इन किताबों का उद्देश्य गाँव के लोगों और बच्चों में पढ़ने-लिखने की रुचि पैदा करना है।


बिनी के जानवर: मिलसेंट सेल्सैम
*Benny's Animals*
*And How He Put Them In Order: Millicent E. Selsam*
अनुवाद: अरविन्द गुप्ता

जनवाचन बाल पुस्तकमाला के तहत भारत ज्ञान विज्ञान समिति द्वारा प्रकाशित



© भारत ज्ञान विज्ञान समिति



रेखांकन : आर्नल्ड लोबेल
ग्राफिक्स : अभय कुमार झा

पांचवां संस्करण : वर्ष 2007

मूल्य : 15 रुपये

*Bharat Gyan Vigyan Samithi*
***Basement of Y.W.A. Hostel No. II, G-Block***
***Saket , New Delhi - 110017***
***Phone : 011 - 26569943, Fax : 91 - 011 - 26569773***
email: bgvs_delhi@yahoo.co.in, bgvsdelhi@gmail.com
***Printed at Sun Shine Offset , New Delhi - 110018***


# बिनी के जानवर

## और कैसे उसने उनके समूह बनाए

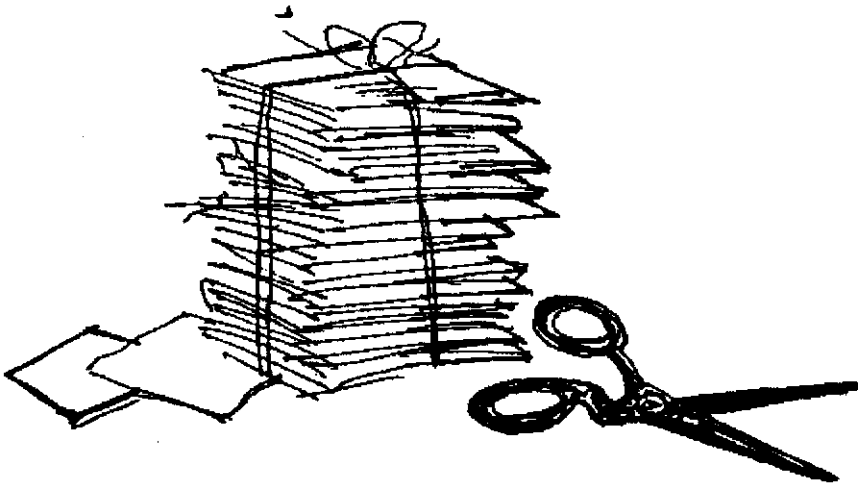

मिलसेंट सेल्सैम

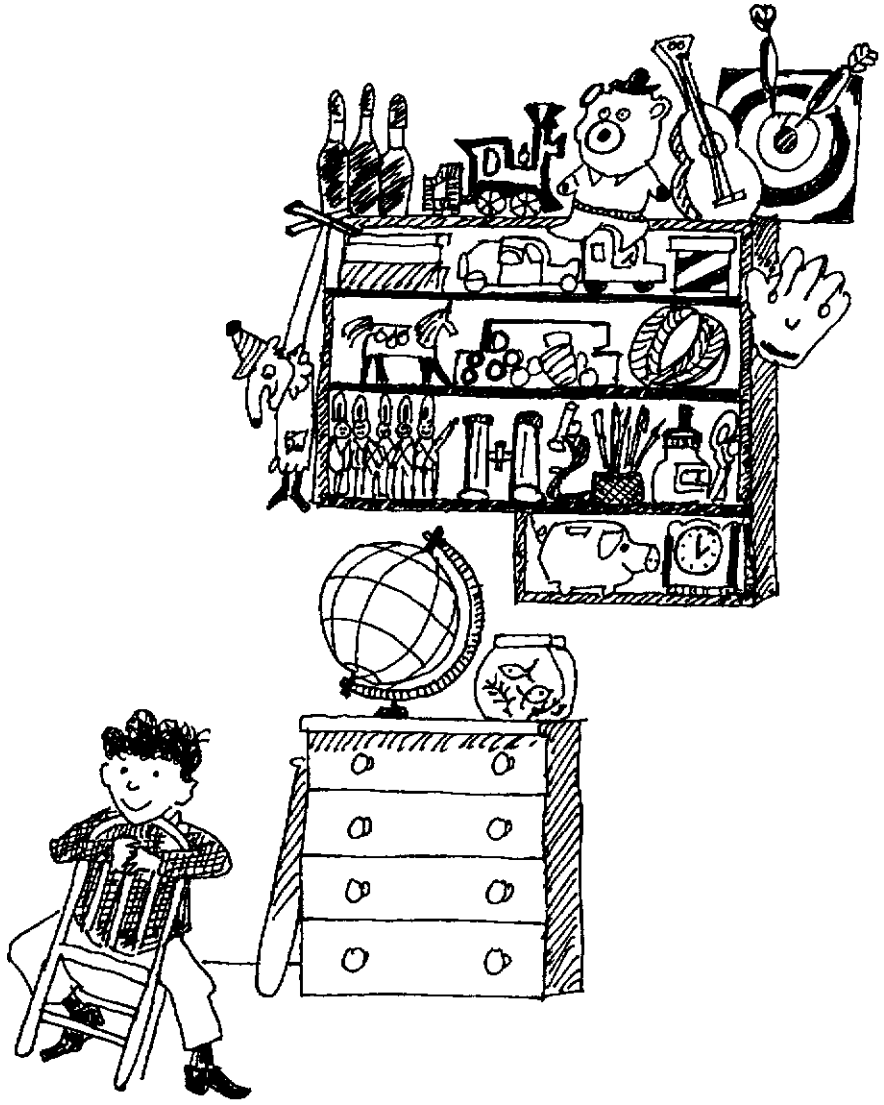

बिनी एक साफ–सुथरा लड़का था।
वो अपनी हरेक चीज़ को करीने से
सही जगह पर रखता था।

वो बड़ी किताबों को एक जगह रखता।

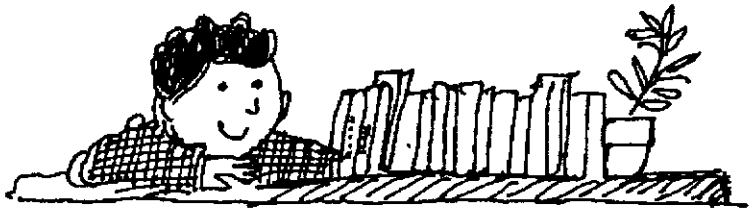

और छोटी किताबों को दूसरी जगह पर।

वो मध्यम आकार की पुस्तकों को
अलग से एक तीसरे स्थान पर रखता था।

जब उसके पास
खूब सारे सिक्के इकट्ठे हो जाते,
तो वो चवन्नियों को एक ढेरी,
अठन्नियों को दूसरी ढेरी,
और एक रुपए के सिक्कों को
तीसरी ढेरी में रखता था।



एक दिन बिनी की मां ने उसके पिता से पूछा,
"आप बिनी के बारे में क्या सोचते हैं,
उसके साथ सब ठीक–ठाक तो है?
डेविड की मां कहती है कि डेविड की
सभी चीज़ें हमेशा फर्श पर ही बिखरी रहती हैं।

जौन की मां का भी यही रोना है।
जौन हमेशा चीज़ों को इधर–उधर फेंकता रहता है।

परंतु बिनी
अपनी चीज़ों को,
हमेशा सही जगह पर रखता है।''

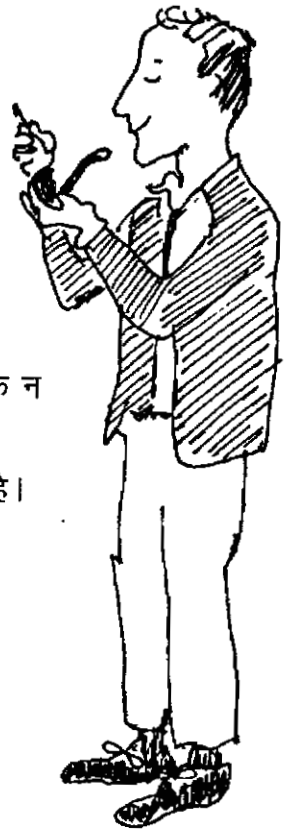

''अरे तुम उसके बारे में बिल्कुल फिक्र न
करो,'' बिनी के पिता ने कहा,
''वो एक अच्छा और प्यारा लड़का है।
वो अपनी सभी चीज़ों को बड़े
कायदे–करीने से रखता है।''

एक दिन बिनी सैर करने
समुद्र के किनारे गया।
वहां उसे कई अनूठी चीज़ें मिलीं।

उसने उन्हें एक कागज़ की थैली
में इकट्ठा किया।

जब वो घर आया
तब उसने उन चीज़ों को
थैली से बाहर निकाला
और उन्हें संभाल कर देखा।

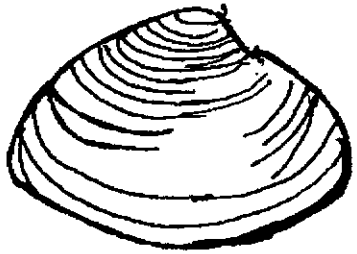

कुछ देखने में ऐसे थीं।

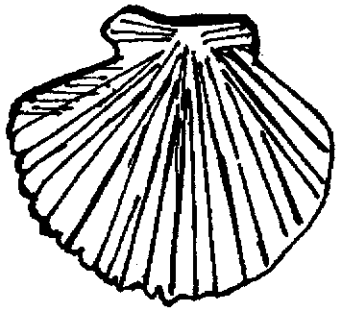

कुछ देखने में ऐसी।

और कुछ इस आकार की थीं।



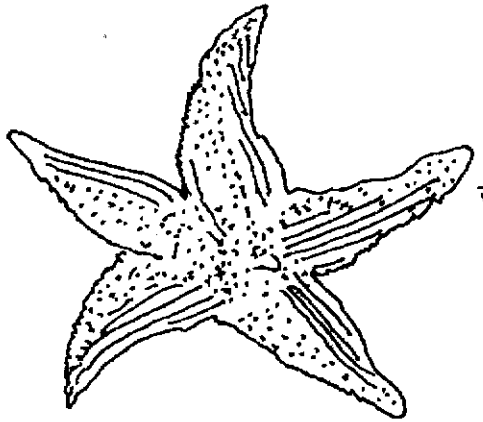

उनमें से एक चीज़ पांच
पंखुड़ियों वाले फूल
जैसी लगती थी।

दूसरी चीज़ कुछ–कुछ ऐसी थी।
बिनी ने अपनी मां को बुलाया।

''मां,'' उसने पूछा,
''क्या आपको इन चीज़ों के
बारे में कुछ पता है?''
''ये सीप–शंख, जानवरों के
बाहरी खोल या कवच हैं,''
बिनी की मां ने जवाब दिया।
बिनी ने कहा, ''सीप–शंखों का जानवरों से कुछ रिश्ता है,
यह मुझे पता नहीं था।''
मां ने कहा, ''यह सच है।
कुछ जीव, समुद्र के पानी में घुले खनिजों से
सीप और शंख जैसे खोल बनाते हैं।
देखो यह एक बड़ी सीपी है।
और यह एक घोंघा है।
पर यह गोल दिखने
वाली चीज़ क्या है?

मुझे पक्की तरह नहीं मालूम।
पर हम इसका जवाब किताबों में
ढूंढ सकते हैं।''

मां ने बिनी को समुद्री जीवों के बारे में एक किताब दी।
किताब में बहुत सारे जीवों के चित्र थे।
उसे उसमें एक गोल आकार का सीप दिखा
जो घोंघे का खोल था।
फिर उसे एक शंख दिखा जिसमें कई नोकें थीं।
वो स्टारफिश (सितारा मछली) थी।
फिर उसे कई पैरों वाला एक खोल दिखा। वो केंकड़ा था।

बिनी अपने कमरे में
वापिस गया।
उसने सभी बड़ी
सीपियों को एक ढेरी
में रखा और सभी
घोंघों को एक दूसरी ढेरी में। उसने नोकों वाले शंखों को एक–साथ रखा। और स्टारफिश तथा केंकड़े को अलग–अलग रखा। फिर उसने एक तख्ती बनाई और उस पर लिखा:–

समुद्री जीव



बिनी के दोस्त
उससे मिलने आए।
उन्होंने बिनी की बनाई
हुई तख्ती को देखकर पूछा,
''तुम इन चीज़ों को
जानवर क्यों बुलाते हो?''
''क्योंकि ये वाकई में जानवर हैं,''
बिनी ने जवाब दिया।

जौन ने कहा, ''परंतु भाई मैं तो इन्हें जानवर नहीं मानूंगा''।
''ठीक है,'' बिनी ने पूछा,
''फिर जानवर कौन होते हैं?''
जौन ने कहा, ''अरे भाई घोड़ा जानवर होता है।
ज़ेबरा और बिल्ली भी जानवर ही हैं, और हाथी भी!
जानवरों का सिर और शरीर होता है
और सभी के चार पैर होते हैं।''
बिनी ने पूछा, ''क्या चिड़िए जानवर होती हैं?''
जौन ने कहा, ''चिड़ियों के केवल दो ही पैर होते हैं।
चिड़िए जानवर नहीं होती हैं।''
''और मछलियां?'' बिनी ने पूछा, ''उनके तो पैर ही नहीं होते।''
जौन ने कहा, ''मछलियों को भी मैं जानवर नहीं मानूंगा''।

अंत में बिनी ने पूछा, "अच्छा यह बताओ कि तितली क्या होती है?"
जौन ने कहा, "इसका उत्तर मुझे पता है।
तितलियां कीड़ों के समूह की हैं। वे जानवर नहीं हैं"।
बिनी ने कहा, "पर मेरी मां तो इन बड़ी सीपियों
और घोंघों को जानवर समझती हैं"।
"चलो एक बार हम दुबारा उनसे जाकर पूछते हैं,"
जौन ने सुझाव दिया।
दोनों लड़के बिनी की मां के पास गए।
बिनी ने पूछा, "मां, आप कहती हैं कि
बड़ी सीपियां और घोंघे दोनों जानवर होते हैं"।
"हां," बिनी की मां ने उत्तर दिया,
"कोई जीवित चीज़, अगर वो पौधा नहीं है
तो वो जानवर ही होगी।"
बिनी ने पूछा, "परंतु यह जीवित
चीज़ भला क्या होती है?"

मां ने बिनी से पूछा, "देखो, हमारी
बिल्ली जीवित है जबकि वो बड़ा
पत्थर, जीवित नहीं है।
तुम मुझे बताओ कि बिल्ली और पत्थर में क्या अंतर है?"

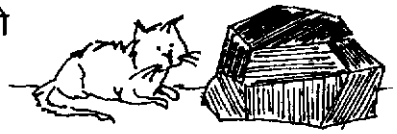

"पत्थर खाना नहीं खाता है," बिनी ने जवाब दिया।
"पत्थर सांस नहीं लेता है," बिनी ने सोच कर कहा।

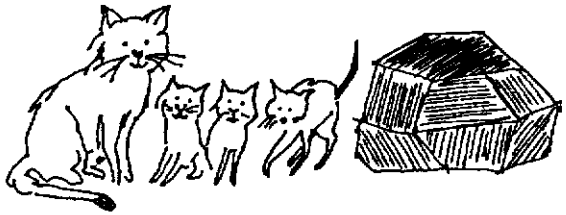

तब बिनी की मां ने कहा, "बहुत अच्छे!
देखो, पत्थर अपने जैसे अन्य पत्थर पैदा नहीं कर सकता।
तुम्हारी बड़ी सीपियां और घोंघे यह सभी काम कर सकते हैं,
और वो पौधे नहीं हैं।"
जौन ने आखिर में बात मानते हुए कहा,
"मुझे भी लगता है कि ये सब जानवर ही हैं"।
तब बिनी ने खुश होते हुए कहा,
"इसका मतलब है कि जो तख्ती मैंने लगाई थी, वो सही थी"।

उस रात बिनी ने अपनी मां, पिता
और छोटे भाई ऐडी के साथ खाना खाया।
बिनी ने पूछा, "पिताजी, क्या हम सब लोग जानवर हैं?"
"देखो ....." उसके पिता सोचने लगे।
"देखिए पिताजी," बिनी ने कहा,
"हम सभी लोग ज़िंदा हैं।
हम खाना खाते हैं और सांस लेते हैं, हैं न?
हम लोग पेड़–पौधे भी नहीं हैं, सही है न?"
पिता ने कहा, "एकदम सही"।
बिनी ने पूछा, "फिर क्या हम लोग जानवर हैं?"
बिनी की मां ने कहा, "तुम सही कह रहे हो"।
पिता ने पूछा,
"फिर हम दूसरे जानवरों से किस प्रकार अलग हैं?"



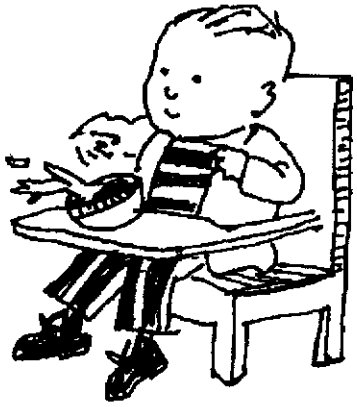

बिनी ने कहा, "अपना छोटा ऐडी तो
एकदम जानवरों जैसा है क्योंकि
वो तो बोल भी नहीं सकता है।"
तभी ऐडी ने कहा, "पा – पा"।
"देखो जरा," बिनी की मां ने कहा,
"ऐडी बोलना सीख रहा है।
वो दूसरे जानवरों से काफी अलग है।"
"परंतु अभी तो ऐडी जानवरों जैसा ही है," बिनी ने कहा।
"नहीं, चुप रहो," मां ने थोड़ा गुस्से में कहा,
"अभी भी ऐडी और जानवरों में काफी अंतर है।"
"जिन जानवरों के बारे में हमें पता है ज़रा
उनके बारे में हम कुछ सोचें,"
बिनी ने सुझाव दिया।
"अभी नहीं," मां ने कहा,
"हमारे पास बहुत सारी पुरानी
पत्रिकाएं पड़ी हैं।
पहले तुम उनमें से जानवरों के
चित्र खोजो और काटो।"

इस काम में जौन ने बिनी की सहायता की।
दोनों जानवरों के चित्र ढूंढने में लग गए।
उन्होंने शेर, चीतों, तितलियों और सांपों के चित्र काटे।
उन्होंने कीड़े–मकौड़ों, मेढकों और कुत्तों के चित्र काटे।
कई जगह उन्हें बंदरों, व्हेलों, चिड़ियों,
मछलियों और घोंघों की तस्वीरें भी मिलीं।

कुछ ही देर में चित्रों की एक
ऊंची ढेरी बन गई।
"जो चित्र एक जैसे
दिखते हैं, चलो उन्हें
एक–साथ रखते हैं,"
बिनी ने सुझाव दिया।
"अच्छा," कह कर
जौन ने उसकी बात
मान ली।

एक ढेरी में बिनी ने चिड़िए, तितलियां और चमगादड़ रखे।
"इन सभी के पंख हैं," उसने कहा।
एक दूसरी ढेरी में उसने कीड़े और सांप रखे।
"क्योंकि ये सभी लंबे और पतले हैं," बिनी ने कहा।
एक अन्य ढेरी में उसने चार पैरों वाले जानवरों को रखा।
जौन ने कहा, "मैं पानी में रहने वाले सभी जीवों को
एक साथ रख रहा हूं"।
उसने बेनी को एक ढेरी दिखाई जिसमें केवल
मछलियां, सीपियां, घोंघे और जेलीफिश थीं।
"ये देखने में तो एक जैसे नहीं लगते," बिनी ने कहा।
"मुझे मालूम है," जौन ने उत्तर दिया,
"परंतु ये सभी जीव समुद्र में ही
रहते हैं।"
बिनी ने कहा, "लेकिन
इससे क्या फायदा होगा।
मैं चाहता हूं कि
वो सभी देखने में
एक–समान हों"।

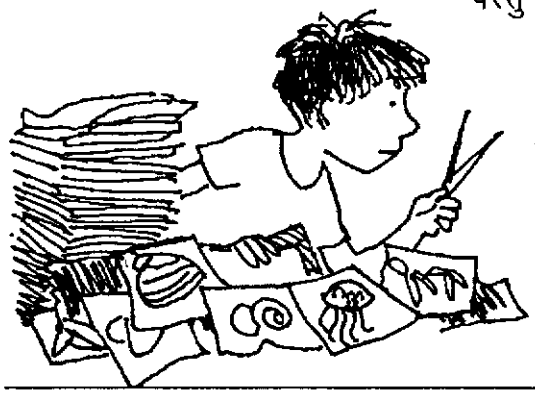

इतनी देर में बिनी के पिता कमरे में आए।
उन्होंने पूछा, "तुम लोग कितने जानवर खोज पाए"?
"बहुत सारे," बिनी ने जवाब दिया "देखिए, जो जानवर देखने में
एक–जैसे हैं हमने उन्हें एक साथ रखा है।"
बिनी के पिता ने चित्रों के अलग–अलग समूहों को देखा।
"मुझे इनमें कुछ गड़बड़ नज़र आती है," उन्होंने कहा,
"तुमने चिड़ियों, तितलियों और चमगादड़ों को
एक साथ क्यों रखा है"?
"क्योंकि इन सभी प्राणियों के डैने हैं,"
बिनी ने झट से जवाब दिया।
बिनी के पिता ने कहा,
"परंतु चिड़ियों के मुलायम पंख होते हैं जबकि चमगादड़ों का रोएंदार
फर होता है और तितलियों के पंखों पर छोटे–छोटे स्केल होते हैं।
मेरी राय में इन्हें एक–साथ रखना सही नहीं है"।
बिनी ने पूछा, "हमें इस बारे में ठीक
और पक्की जानकारी कौन दे सकता है?"
बिनी के पिता ने कहा, "मैं तुम्हें म्यूजियम ले चलूंगा।
वहां शायद कोई व्यक्ति तुम्हारी मदद कर पाए"।

अगले शनिवार पिताजी,
बिनी और जौन दोनों को
म्यूजियम ले गए।
बिनी के पिता ने दरवाज़े पर
खड़े दरबान से पूछा,
"क्या, यहां कोई व्यक्ति इन
जानवरों को ठीक तरह से लगाने में
हमारी मदद कर सकता है?"

दरबान ने जवाब दिया,
"आप लोग चौथी मंजिल पर प्रोफेसर वुड के पास जाएं"।
प्रोफेसर वुड से मिलने पर सबसे पहले बिनी ने ही सवाल पूछा,
"हमारे पास खूब सारे जानवरों के चित्र हैं।
हम उन जानवरों को
अलग–अलग समूहों में रखना चाहते हैं।
क्या इसमें आप हमारी
कुछ मदद कर सकते
हैं?"

प्रोफेसर वुड ने कहा,
"पहले मैं जरा तुम्हारे
चित्रों को तो देखूं"।

बिनी ने प्रोफेसर को वो ढेरी दिखाई
जिसमें कीड़ों और सांपों के चित्र थे।
"इन दोनों को एक–साथ रखना ठीक नहीं होगा,"
प्रोफेसर वुड ने कहा।
"क्यों नहीं?" बिनी ने पूछा,
"दोनों देखने में तो एक–जैसे ही हैं?"
प्रोफेसर वुड ने कहा, "परंतु इस बात का इतना
महत्व नहीं हैं। हम उन जीवों को एक साथ रखते
हैं जिनका ढांचा एक–समान होता है"।
"ढांचा?" बिनी ने पूछा, "यह क्या होता है?"

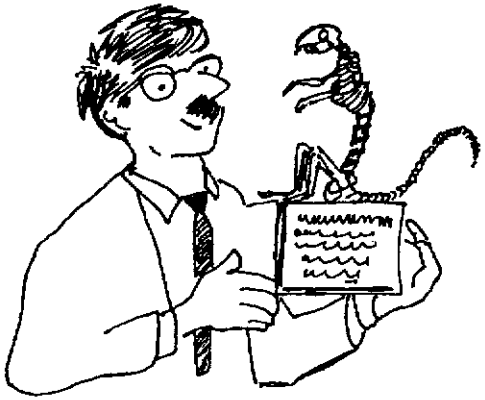

प्रोफेसर वुड ने कहा, "इसका मतलब जानवर के अंगों
और उनके एक–दूसरे के साथ जुड़े होने से संबंधित है।
पहला प्रश्न जो हम पूछते हैं, वो है: क्या जानवर की रीढ़ की हड्डी है?
सभी जानवरों की या तो रीढ़ की हड्डी होती या नहीं होती है।
और इस प्रकार जानवर दो बड़े समूहों में बंट जाते हैं।"
"केवल दो समूहों में!" बिनी ने चकित होते हुए पूछा।
"यह तो बस शुरुआत है," प्रोफेसर ने कहा।
"तुम घर जाकर पहले एक काम करो।
इन चित्रों की दो ढेरियां बनाओ।
पहली ढेरी में रीढ़ की हड्डी वाले जानवरों को रखो।
दूसरी ढेरी उन जानवरों की हो जिनकी रीढ़ की हड्डी न हो।
हां, एक बात ज़रूर याद रखना।
हर हड्डी वाले जीव की रीढ़ की हड्डी भी ज़रूर होगी।
फिर तुम वापिस आना और मैं आगे तुम्हारी मदद करूंगा।"
बिनी ने कहा,"ठीक है"।
"अच्छा," जौन ने कहा।
"बहुत धन्यवाद," बिनी के पिता ने कहा।
"जल्दी वापिस आना," प्रोफेसर वुड ने मुस्कुराते हुए कहा।

अगले दिन बिनी और जौन ने दुबारा चित्रों को गौर से देखा।
''क्या चिड़ियों की रीढ़ की हड्डी होती है?'' बिनी ने पूछा।
''हां। क्या तुमने कभी मुर्गी नहीं खाई है?'' जौन ने कहा।
''अरे हां।'' यह कह कर बिनी ने चिड़िया के चित्र को
रीढ़ की हड्डी वाली ढेरी में रख दिया।
''और तितली?'' जौन ने पूछा।
बिनी ने कहा, ''वो तो एकदम लेई की तरह मुलायम होती है''।
''सांप?'' जौन ने पूछा।
''फ्रेड के पास एक सांप का कंकाल है।
यानि सांप को रीढ़ की हड्डी वाली ढेरी में रखा जाए,'' बिनी ने कहा।
''कीड़े?'' जौन ने पूछा।
''उनकी रीढ़ की हड्डी नहीं होती,'' बिनी ने कहा।
''मछली?'' जौन ने पूछा।

''मुझे मालूम है वो कहां जाएगी।
हर बार जब मैं मछली खाता हूं तो मुझे
उसकी रीढ़ की हड्डी दिखती है।''
बिनी ने पूछा, ''पर यह सीप वाले
जीव कहां जाएंगे?''
जौन ने कहा, ''सीप का सख्त भाग
तो बस बाहर ही होता है।
मैंने एक बार बड़ा घोंघा खाया था और वो अंदर से एकदम नरम था।
चलो, फिर उसे बिना रीढ़ की हड्डी वाली गड्डी में रखते हैं।''
बिनी ने कहा, ''मैंने भी एक बड़ी सीपी खाई थी
वो भी अंदर से नरम थी।''
जौन ने कहा, ''ठीक है,
उसे भी बिना रीढ़ की हड्डी वाली गड्डी में जाने दो''।
उन्होंने बंदरों, चीतों, शेरों, हाथियों, हिरनों,
कुत्तों और बिल्लियों को रीढ़ की
हड्डी वाली ढेरी में रखा।
बिनी ने कहा,
''इन सबकी
हड्डियां होती हैं
यह मुझे अच्छी
तरह पता है''।

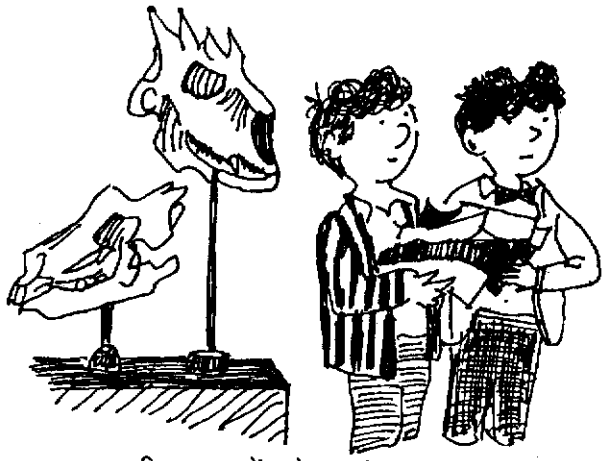

बाकी जानवरों को कहां रखा जाए
यह बिनी और जौन को समझ नहीं आया।
उन्होंने उन्हें अलग से तीसरी ढेरी में रख दिया।
फिर बिनी, जौन और बिनी के पिता दुबारा प्रोफेसर वुड के पास गए।
प्रोफेसर ने चित्रों के समूहों को देखकर कहा, "बहुत बढ़िया।
परंतु यह तीसरी ढेरी में क्या है?"
"हमें समझ में नहीं आया कि इन जानवरों को कहां रखें,"
बिनी ने सफाई देते हुए कहा।
प्रोफेसर वुड ने तीसरी ढेरी में रखे जानवरों को देखा और कहा,
"यह केंकड़ें और स्टार फिश,
बिना रीढ़ की हड्डी वाली गड्डी में
जाएंगे। वे बाहर से कठोर होते
हैं परंतु उनके अंदर
कोई हड्डी नहीं होती
है और यह मेंढक
रीढ़ की हड्डी वाले
समूह में जाएंगे"।

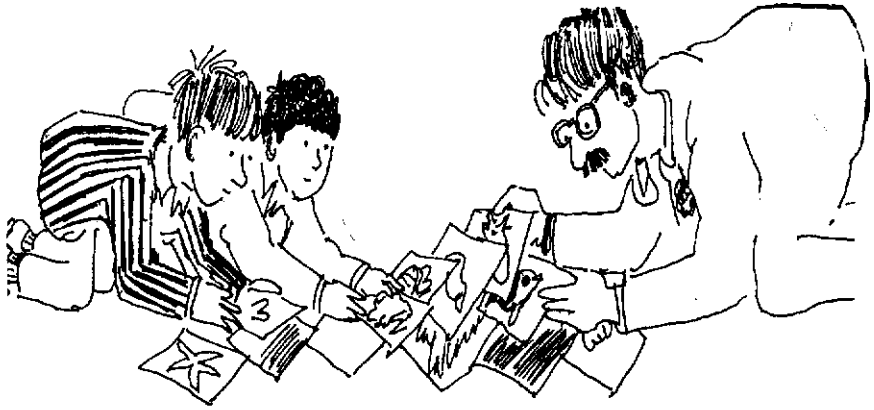

फिर प्रोफेसर वुड ने रीढ़ की हड्डी वाली पूरी ढेरी को उठाया
और कहा, "तुम्हें याद है न।
मैंने कहा था कि यह तो सिर्फ शरुआत है।
अब हम इस ढेरी को पांच अलग-अलग समूहों में बांट सकते हैं।
पहली ढेरी में मछलियां होंगी।
दूसरी में ऐसे जीव होंगे जो पानी और जमीन दोनों पर रहते हैं –
शिशु अवस्था वो पानी में बिताते हैं
और बड़े होने के बाद ज़मीन पर आ जाते हैं।
मेंढक इनका अच्छा उदाहरण हैं।
तीसरी ढेरी में होंगे रेंगनेवाले सरीसृप जैसे –
सांप, छिपकली, कछुए और मगरमच्छ।
चौथी ढेरी में चिड़िए होंगी– उनमें हरेक के पंख होंगे।
और आखिरी ढेरी में होंगे स्तनपाई जीव –
उनके शरीर पर बाल या रोयेंदार फर होता है।
घर जाने के बाद तुम रीढ़ की हड्डी वाली ढेरी को
इन पांच समूहों में बांटना:
मछली, पानी और ज़मीन दोनों में रहने वाले
जलथली, रेंगनेवाले सरीसृप, पक्षी और स्तनपाई।"

बिनी ने पूछा, "बिना रीढ़ की हड्डी वाली ढेरी का हम क्या करें?"
"तुम्हारे पास अभी के लिए काफी काम है," प्रोफेसर ने उत्तर दिया।
"क्या हम बिना रीढ़ की हड्डी वाले जीवों के लिए
आपके पास दुबारा वापिस आ सकते हैं?" जौन ने पूछा।
"ज़रूर," प्रोफेसर वुड ने जवाब दिया।
"तब क्या हमें जानवरों को अलग-अलग समूहों में रखना
पूरी तरह समझ में आ जाएगा?" बिनी ने पूछा।
प्रोफेसर वुड ने कहा, "पूरी तरह तो नहीं,
पर हां, कुछ तो समझ में आएगा ही।
बाद में तुम इन छोटी ढेरियों को और
छोटी-छोटी ढेरियों में बांटना भी सीख सकते हो।"

बिनी ने पूछा, "आपका मतलब है कि रीढ़ की हड्डी वाली
गड्डी को पांच ढेरियों में बांटने के बाद हम इन ढेरियों की
और छोटी–छोटी ढेरियां भी बना सकते हैं"?
प्रोफेसर वुड ने कहा, "हां बिल्कुल, दुनिया में लगभग 17,000
किस्म की मछलियां हैं और हज़ारों प्रकार के
जलथली, सरीसृप, पक्षी और स्तनपाई प्राणी हैं।
प्रत्येक समूह को और छोटे गुटों में बांटा जा सकता है।"

बिनी ने कहा,
"मुझे लगता है कि यह सब करने में बहुत समय लगेगा"।
प्रोफेसर ने कहा,
"तुम चाहो तो इस काम में अपना सारा जीवन बिता सकते हो।
मैंने तो सारी ज़िंदगी यही किया है।"
"सारी ज़िंदगी!" बिनी ने आश्चर्य के साथ कहा।
"यकीन नहीं होता!" जौन चिल्लाया।

"हां," प्रोफेसर वुड ने कहा,
"परंतु तुम्हें इसमें सारी ज़िंदगी खपाने की ज़रूरत नहीं है।
तुम्हारी रुचि केवल मुख्य समूह जानने तक ही सीमित है।
और सभी अलग–अलग, छोटे समूहों को
जानना भी उतना ज़रूरी नहीं है।"
"फिर सबसे ज़रूरी क्या है?" बिनी ने पूछा।
प्रोफेसर ने कहा, "देखो तुम लोग जानवरों के
एक समूह को दूसरे से अलग करना सीख रहे हो"।
"यह तो ठीक है," बिनी ने कहा।

"परंतु मैं इन सभी समूहों को एक साथ इकट्ठा करता हूं।
यही करने में मेरा सारा समय बीतता है," प्रोफेसर वुड ने कहा।

"आप इन्हें आपस में कैसे ला सकते हैं?" जौन ने पूछा।
"मैं यह जानने की कोशिश करता हूं कि इन जानवरों का
एक–दूसरे से किस प्रकार का रिश्ता है," प्रोफेसर ने कहा।
"क्या जानवरों के भी रिश्तेदार होते हैं?" बिनी ने मुस्कुराते हुए पूछा।
"हां," प्रोफेसर वुड ने कहा, "परंतु हरेक जानवर के नहीं।
लेकिन एक प्रकार दिखने वाले जानवरों के रिश्तेदार ज़रूर होते हैं।"
"सच," बिनी अपना कौतुहल न रोक सका।
"क्या तुम्हारे किसी चचेरे, ममेरे भाई की शक्ल
तुमसे कुछ–कुछ मिलती–जुलती है?" प्रोफेसर ने पूछा।
"हां," बिनी ने कहा, "मेरे चाचा का लड़का देखने में
काफी कुछ मेरे जैसा लगता है।"
"ऐसा क्यों होता है, क्या तुम्हें पता है?" प्रोफेसर ने पूछा।
बिनी ने जवाब दिया, "मुझे नहीं मालूम।"
"तुम्हारे और चाचा के लड़के के दादाजी तो एक ही हैं।
क्यों हैं न?" प्रोफेसर ने पूछा।



बिनी ने कुछ देर सोचा फिर
कहा "यह तो सच है।"
प्रोफेसर वुड ने पूछा,
"दो अलग किस्म के
जानवरों का ढांचा
एक–समान कैसे हो सकता है?
शायद अब तुम इस प्रश्न
का उत्तर दे सको?"
जौन ने अटकल लगाई,
"शायद उन जानवरों के
दादा, पर–दादा एक ही हों।"

"तुम्हारा जवाब कुछ–कुछ ठीक
है," प्रोफेसर ने कहा।
"दादा, पर–दादा से
हमारा मतलब
लाखों–करोड़ों साल
पुराने जीवों से है।

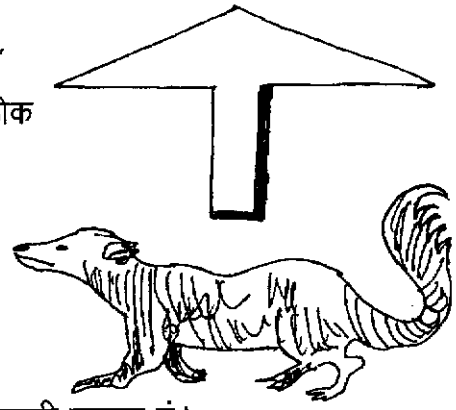

चलो मैं तुम्हें एक सच्ची कहानी सुनाता हूं।
"आज से करीब पांच करोड़ साल पहले एक जानवर था।
वो जंगल में रहता था।
उसका सिर लोमड़ी जैसा था।
उसकी पूंछ लंबी थी।
उसके दांत और पंजे पैने थे।
उसी प्रकार के जानवर से ही बाद में
शेर, चीते, तेंदुए और बिल्लिएं बनीं।

ये सभी
जानवर
एक–दूसरे के
रिश्तेदार हैं।''
''मैं समझा,''
बिनी ने कहा।

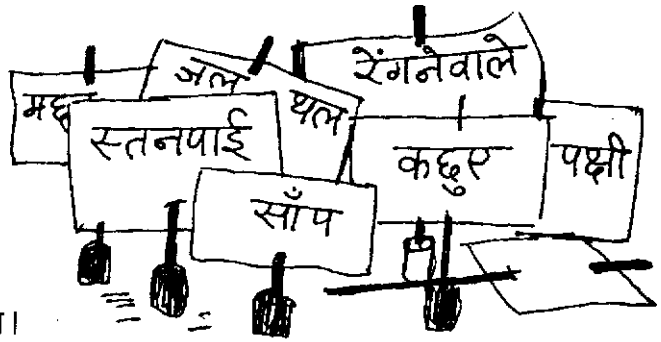


प्रोफेसर ने कहा, ''ये जानवर एक–दूसरे के रिश्तेदार तभी होंगे,
जब हम इन सबके किसी एक पूर्वज को खोज पाएं''।

जौन ने कहा,
''चलो पहले हम अपने जानवरों
को सही क्रम में लगाते हैं''।
''फिर तो हम पूर्वजों को
खोजने वाले जासूस बन
जाएंगे,'' बिनी ने कहा।

अंत में
प्रोफेसर वुड ने कहा,
''मैंने तो यह कभी
सोचा भी नहीं था।
असल में यही तो मेरा
पेशा है।''

❐❐